

## सीधी जिले में पर्यटन विकास का भूमि उपयोग और पर्यावरणीय परिवर्तन पर प्रभाव

शोध-निर्देशक

डॉ. के.एस. नेताम

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग  
संजय गांधी स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय  
सीधी, जिला-सीधी (म.प्र.)

शोधार्थी

प्रसून कुमार मिश्र

शोधार्थी, भूगोल विभाग

### सार

प्रस्तुत शोध पत्र में सीधी जिले में पर्यटन विकास के कारण भूमि उपयोग एवं पर्यावरणीय परिवर्तन के प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों, वन्यजीव संपदा, नदी तटीय क्षेत्रों तथा धार्मिक स्थलों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है, जिससे यह पारिस्थितिक एवं धार्मिक पर्यटन के विकास के लिए उपयुक्त क्षेत्र बनता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सीधी जिले में उपलब्ध पर्यटन संसाधनों की पहचान करना, पर्यटन विकास की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना तथा पर्यटन गतिविधियों के कारण भूमि उपयोग एवं पर्यावरणीय परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। शोध के अंतर्गत पाया गया कि पर्यटन गतिविधियों के विस्तार के कारण कृषि भूमि के उपयोग में परिवर्तन, वन क्षेत्रों पर दबाव, सड़क निर्माण एवं अवसंरचना विकास में वृद्धि तथा स्थानीय स्तर पर सेवा क्षेत्र की गतिविधियों का विस्तार हुआ है। इसके साथ ही जल संसाधनों पर दबाव, जैव विविधता में परिवर्तन, प्रदूषण की समस्या तथा अपशिष्ट प्रबंधन जैसी पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यदि पर्यटन विकास को सतत विकास की अवधारणा के अनुरूप योजनाबद्ध तरीके से संचालित किया जाए, तो यह क्षेत्रीय आर्थिक विकास के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है। अतः आवश्यक है कि पर्यटन विकास की प्रक्रिया में स्थानीय समुदाय की सहभागिता, पर्यावरणीय संतुलन तथा संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को प्राथमिकता दी जाए।

## प्रमुख शब्द

पर्यटन विकास, भूमि उपयोग परिवर्तन, पर्यावरणीय प्रभाव, जैव विविधता, संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व, सीधी जिला, सतत पर्यटन विकास, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण

### 1. प्रस्तावना

#### 1.1 पर्यटन विकास की अवधारणा और क्षेत्रीय विकास में इसकी भूमिका

पर्यटन विकास आधुनिक क्षेत्रीय विकास की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से किसी क्षेत्र की आर्थिक संरचना, सामाजिक व्यवस्था तथा पर्यावरणीय स्वरूप में व्यापक परिवर्तन होते हैं। पर्यटन केवल मनोरंजन अथवा भ्रमण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्थानीय संसाधनों के उपयोग, आधारभूत संरचना के विस्तार तथा क्षेत्रीय पहचान के निर्माण का एक प्रभावी साधन है। पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से सड़क, परिवहन, आवास, संचार तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं का विकास होता है, जिससे क्षेत्रीय विकास को गति मिलती है (सिंह, 2014)।

पर्यटन विकास विशेष रूप से ग्रामीण एवं वन क्षेत्रों में रोजगार सृजन, आय वृद्धि तथा स्थानीय संसाधनों के संरक्षण एवं उपयोग को प्रोत्साहित करता है। इसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में सहायता मिलती है तथा स्थानीय समुदाय की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है (शार्पले एवं टेलफर, 2015)। इसके अतिरिक्त पर्यटन विकास सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग तथा पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (यूएनडब्ल्यूटीओ, 2018)।

#### 1.2 भारत एवं मध्यप्रदेश में पर्यटन का बढ़ता महत्व

भारत में पर्यटन क्षेत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक बन चुका है, जो सकल घरेलू उत्पाद, विदेशी मुद्रा अर्जन तथा रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान देता है। भारत सरकार की पर्यटन सांख्यिकी रिपोर्ट के अनुसार पर्यटन क्षेत्र देश के सेवा क्षेत्र का एक प्रमुख स्तंभ है तथा यह क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है (पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, 2022)।

मध्यप्रदेश राज्य प्राकृतिक संसाधनों, वन्यजीव अभयारण्यों, ऐतिहासिक स्मारकों तथा धार्मिक स्थलों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। खजुराहो, सांची, भीमबेटका, कान्हा एवं बांधवगढ़ जैसे पर्यटन स्थल राज्य की पर्यटन क्षमता को प्रदर्शित करते हैं। राज्य सरकार द्वारा इको-टूरिज्म तथा साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न योजनाएँ लागू की गई हैं, जिससे पर्यटन गतिविधियों में वृद्धि हुई है तथा क्षेत्रीय विकास को नई दिशा मिली है (मध्यप्रदेश शासन, 2003)।

### **1.3 पर्यटन विकास और भूमि उपयोग परिवर्तन के बीच संबंध**

पर्यटन विकास और भूमि उपयोग परिवर्तन के बीच घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। पर्यटन गतिविधियों के विस्तार के साथ होटल, रिसॉर्ट, सड़क, पार्किंग स्थल तथा मनोरंजन सुविधाओं के निर्माण हेतु भूमि उपयोग में परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप कृषि भूमि, वन क्षेत्र तथा प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र प्रभावित होते हैं (ब्रायसोलिस, 2002)।

विशेष रूप से पारिस्थितिक पर्यटन क्षेत्रों में पर्यटन अवसंरचना के विकास के कारण भूमि उपयोग पैटर्न में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलता है, जिससे वन क्षेत्र में कमी, जल संसाधनों पर दबाव तथा जैव विविधता में परिवर्तन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं (सुनलु, 2003)। इसके अतिरिक्त पर्यटन विकास के कारण शहरीकरण की प्रक्रिया तेज होती है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बढ़ता है तथा पर्यावरणीय संतुलन प्रभावित होता है (कपूर, 2018)।

### **1.4 अध्ययन की आवश्यकता एवं उद्देश्य**

सीधी जिला मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण वन एवं प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध क्षेत्र है, जहाँ पारिस्थितिक पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ उपलब्ध हैं। संजय दुबरी राष्ट्रीय उद्यान, धार्मिक स्थल, जलप्रपात तथा प्राकृतिक परिदृश्य इस क्षेत्र को पर्यटन विकास के लिए उपयुक्त बनाते हैं। किन्तु पर्यटन गतिविधियों के विस्तार के साथ भूमि उपयोग परिवर्तन तथा पर्यावरणीय दबाव की समस्याएँ भी उत्पन्न होने लगी हैं।

इस संदर्भ में सीधी जिले में पर्यटन विकास के कारण भूमि उपयोग परिवर्तन एवं पर्यावरणीय प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, जिससे क्षेत्रीय नियोजन, संसाधन संरक्षण तथा सतत विकास की दिशा में प्रभावी रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

### **अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—**

- सीधी जिले में पर्यटन संसाधनों की पहचान करना
- पर्यटन विकास की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना
- पर्यटन विकास के कारण भूमि उपयोग परिवर्तन का अध्ययन करना
- पर्यटन गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन करना
- सतत पर्यटन विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना

### **1.5 शोध की परिकल्पना**

इस अध्ययन की प्रमुख परिकल्पना यह है कि सीधी जिले में पर्यटन विकास के विस्तार के साथ भूमि उपयोग पैटर्न में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है तथा पर्यावरणीय संतुलन प्रभावित हो रहा है। साथ ही यह भी माना गया है कि यदि पर्यटन विकास को वैज्ञानिक एवं सतत नियोजन के आधार पर संचालित किया जाए, तो यह क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

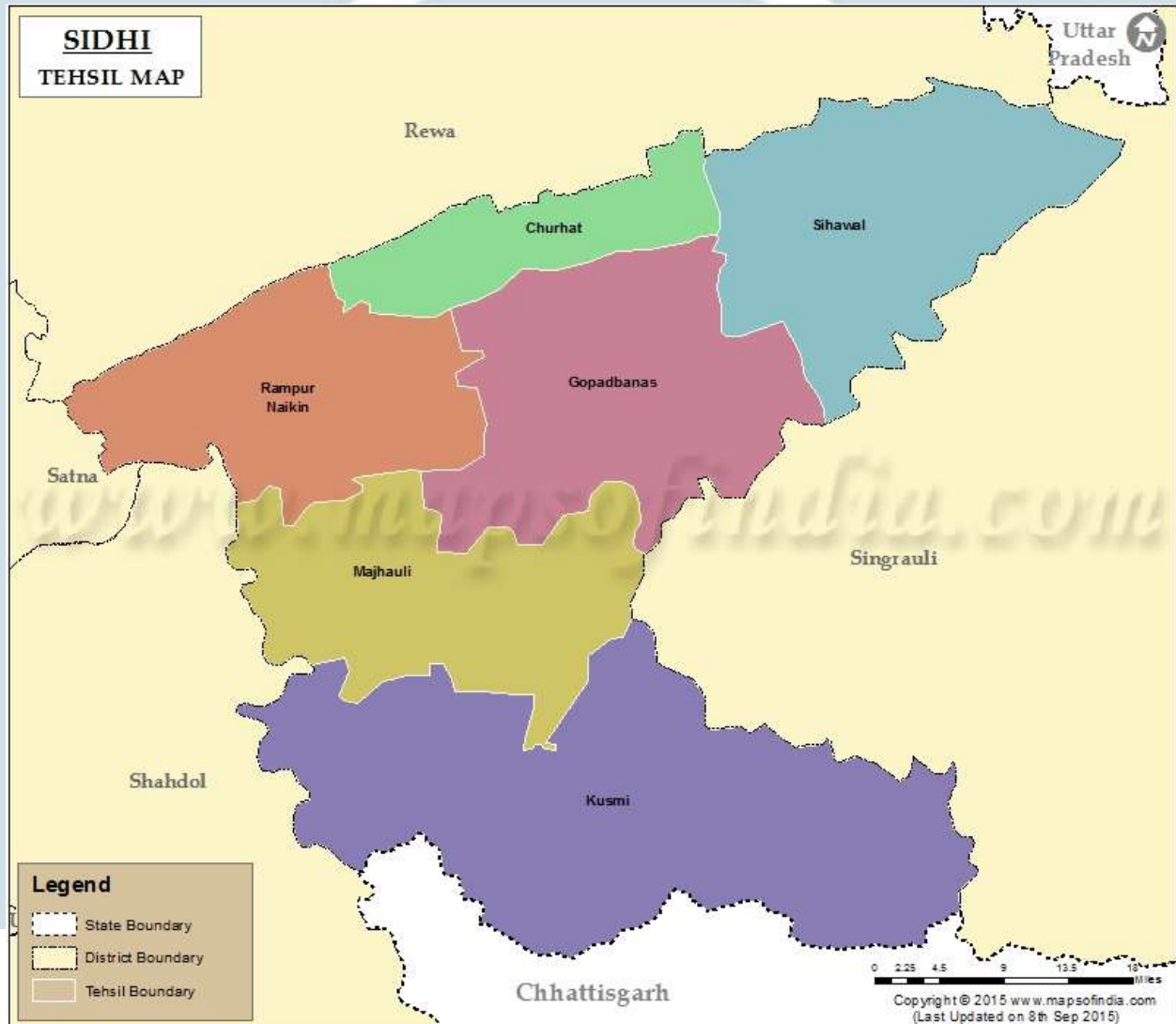
## **2. अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक एवं पर्यावरणीय परिचय**

### **2.1 सीधी जिले की भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार**

सीधी जिला मध्यप्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण भौगोलिक एवं पर्यावरणीय दृष्टि से समृद्ध क्षेत्र है। यह जिला लगभग 22°47' से 24°42' उत्तरी अक्षांश तथा 81°18' से 82°48' पूर्वी देशांतर के मध्य

स्थित है तथा इसकी सीमाएँ उत्तर में रीवा, पूर्व में सिंगरौली, दक्षिण-पूर्व में छत्तीसगढ़ तथा पश्चिम में मैहर जिले से मिलती हैं (भारत सरकार, 2024)।

जिले की भौगोलिक संरचना मुख्यतः विंध्य पर्वतमाला के पठारी भागों से निर्मित है, जो इसे प्राकृतिक संसाधनों तथा जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध बनाती है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से रीवा राज्य का हिस्सा रहा है तथा वर्तमान में कृषि, वन संसाधनों तथा खनिज संपदा के आधार पर विकसित हो रहा है (मध्यप्रदेश शासन, 2023)।



चित्र 1: सीधी जिले का स्थान मानचित्र (Location Map of Sidhi District)  
स्रोत: जिला प्रशासन सीधी (<https://sidhi.nic.in>) एवं Survey of India मानचित्र के आधार पर तैयार।

## 2.2 स्थलाकृति (पठारी क्षेत्र, वन क्षेत्र, नदी तंत्र)

सीधी जिले की स्थलाकृति मुख्यतः विंध्यन पठारी संरचना से निर्मित है, जिसमें पहाड़ी ढाल, घाटियाँ तथा समतल मैदानी क्षेत्र सम्मिलित हैं। जिले में कैमूर, रानीमुंडा तथा केहजुआ पहाड़ियाँ प्राकृतिक भू-आकृतिक संरचना का निर्माण करती हैं, जो क्षेत्र की पर्यावरणीय विविधता को प्रभावित करती हैं (द्विवेदी, 2018)।

वन क्षेत्र इस जिले की प्रमुख भौगोलिक विशेषता है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व तथा बघदरा अभयारण्य जैसे विस्तृत वन क्षेत्र जिले के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (मध्यप्रदेश वन विभाग, 2022)।

नदी तंत्र की दृष्टि से यह क्षेत्र सोन नदी तथा उसकी सहायक नदियों—बनास, गोपद, महान, मवई तथा उमरारी—से सिंचित होता है, जो क्षेत्र के जल संसाधनों तथा कृषि गतिविधियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं (संजय टाइगर रिजर्व प्रबंधन, 2023)।

## 2.3 जलवायु एवं प्राकृतिक संसाधन

सीधी जिले की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है, जिसमें ग्रीष्म ऋतु में उच्च तापमान तथा वर्षा ऋतु में मध्यम से अधिक वर्षा होती है। यह जलवायु कृषि उत्पादन, वनस्पति विकास तथा जैव विविधता के संरक्षण के लिए अनुकूल मानी जाती है (भारतीय मौसम विभाग, 2022)।

जिले में वन संसाधनों के अतिरिक्त खनिज, जल संसाधन तथा कृषि योग्य भूमि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। सोन नदी घाटी क्षेत्र में जल संसाधनों की उपलब्धता के कारण सिंचाई सुविधाएँ विकसित हुई हैं, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है (केंद्रीय जल आयोग, 2021)। इसके अतिरिक्त महुआ, तेंदू, साल तथा बाँस जैसे वन उत्पाद स्थानीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं (मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण, 2023)।

## 2.4 वन संपदा एवं जैव विविधता

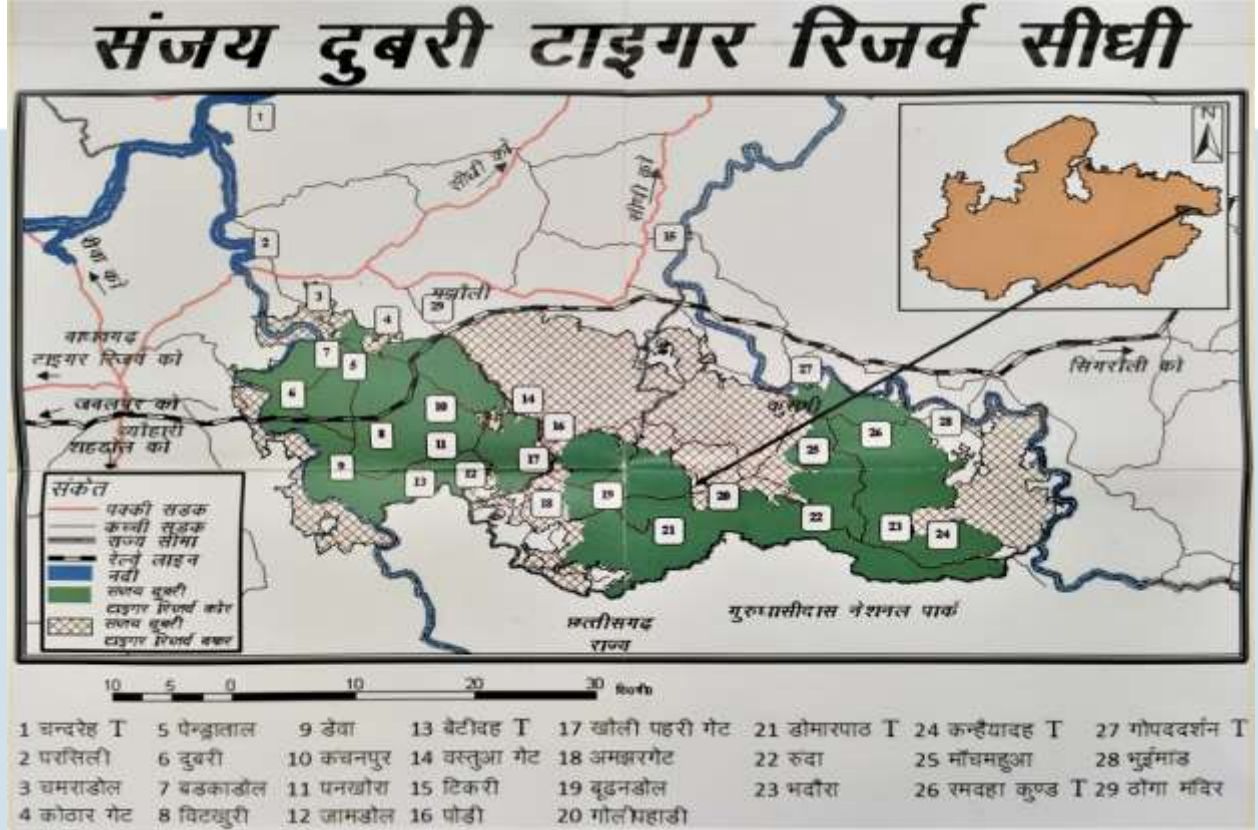
सीधी जिला जैव विविधता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व लगभग 831 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है तथा इसमें साल, बाँस एवं मिश्रित वन पाए जाते हैं (मध्यप्रदेश वन विभाग, 2022)।

यह क्षेत्र बंगाल टाइगर, तेंदुआ, भालू, नीलगाय, चीतल तथा सांभर जैसे वन्य जीवों का महत्वपूर्ण आवास है। इसके अतिरिक्त यहाँ लगभग 150 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ तथा अनेक सरीसृप एवं उभयचर प्रजातियाँ पाई जाती हैं (मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम, 2022)।

बघदरा अभयारण्य तथा सोन घड़ियाल अभयारण्य भी जिले की जैव विविधता को समृद्ध बनाते हैं। सोन घड़ियाल अभयारण्य विशेष रूप से घड़ियाल संरक्षण के लिए स्थापित किया गया है तथा यह सोन, बनास एवं गोपद नदियों के तटवर्ती क्षेत्रों में विस्तृत है (मध्यप्रदेश शासन, 2021)।

## 2.5 प्रमुख पर्यटन स्थल (संजय दुबरी अभयारण्य, धार्मिक स्थल, जलप्रपात आदि)

सीधी जिला प्राकृतिक एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व जिले का प्रमुख पर्यटन आकर्षण है, जो अपनी समृद्ध जैव विविधता, प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्यजीवों के कारण पर्यटकों को आकर्षित करता है (मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम, 2022)।



चित्र 2: संजय दुबरी टाइगर रिजर्व, सीधी जिले का स्थानिक विस्तार एवं प्रमुख पर्यटन स्थलों का वितरण मानचित्र

स्रोत: मध्यप्रदेश वन विभाग, संजय दुबरी टाइगर रिजर्व प्रबंधन योजना एवं जिला प्रशासन सीधी (<https://sidhi.nic.in>) के आधार पर संकलित।

इसके अतिरिक्त सोन घड़ियाल अभयारण्य, बघदरा अभयारण्य तथा पारसिली क्षेत्र भी प्रकृति प्रेमियों के लिए महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल हैं। पारसिली क्षेत्र बनास नदी के किनारे स्थित होने के कारण अपने प्राकृतिक सौंदर्य एवं शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है (मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग, 2022)।

धार्मिक पर्यटन स्थलों में चंद्रेह का प्राचीन शिव मंदिर विशेष महत्व रखता है, जहाँ प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। इसके अतिरिक्त सोन- बनास संगम क्षेत्र भी धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है (जिला प्रशासन सीधी, 2023)।

इस प्रकार सीधी जिला प्राकृतिक, धार्मिक एवं पारिस्थितिक पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत संभावनाशील क्षेत्र है, जो भविष्य में सतत पर्यटन विकास के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करता है।

### **3. पर्यटन विकास की अवधारणा एवं सैद्धांतिक आधार**

#### **3.1 पर्यटन विकास की परिभाषा एवं प्रकार (धार्मिक, पारिस्थितिक, सांस्कृतिक)**

पर्यटन विकास से आशय किसी क्षेत्र के प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक संसाधनों का योजनाबद्ध उपयोग करते हुए पर्यटन गतिविधियों का विस्तार करना है, जिससे क्षेत्रीय आर्थिक उन्नति, अवसंरचना विकास तथा सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन मिलता है। पर्यटन विकास केवल पर्यटकों की संख्या में वृद्धि तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें परिवहन सुविधाओं का विस्तार, आवासीय व्यवस्था का विकास, संचार प्रणाली का सुदृढीकरण तथा स्थानीय संसाधनों का संतुलित उपयोग भी शामिल होता है। किसी भी क्षेत्र में पर्यटन विकास उस क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं, सांस्कृतिक विरासत तथा प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

पर्यटन विकास के विभिन्न प्रकारों में धार्मिक पर्यटन, पारिस्थितिक पर्यटन तथा सांस्कृतिक पर्यटन प्रमुख माने जाते हैं। धार्मिक पर्यटन उन स्थलों से संबंधित होता है जहाँ लोग आस्था, श्रद्धा और आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने के उद्देश्य से यात्रा करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है तथा धार्मिक स्थलों के आसपास अवसंरचना का विकास होता है। पारिस्थितिक पर्यटन प्राकृतिक वातावरण, वन्यजीवों, जैव विविधता तथा संरक्षित क्षेत्रों पर आधारित होता है, जिसका उद्देश्य प्रकृति संरक्षण के साथ-साथ पर्यटकों को प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जागरूक बनाना होता है। सांस्कृतिक पर्यटन किसी क्षेत्र की परंपराओं, लोककला, ऐतिहासिक स्मारकों, उत्सवों तथा सामाजिक जीवन शैली से संबंधित होता है, जो स्थानीय संस्कृति के संरक्षण

और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार पर्यटन के विभिन्न प्रकार किसी क्षेत्र के बहुआयामी विकास में सहायक होते हैं।



**चित्र 3:** पर्यटन विकास की अवधारणा एवं सैद्धांतिक आधार का रूपरेखात्मक चित्र (Conceptual Framework of Tourism Development and Theoretical Basis)

स्रोत: लेखक द्वारा तैयार (साहित्य समीक्षा के आधार पर)।

### 3.2 इको-टूरिज्म की अवधारणा

इको-टूरिज्म या पारिस्थितिक पर्यटन पर्यटन विकास की एक आधुनिक और संतुलित अवधारणा है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ पर्यटन गतिविधियों को विकसित करने पर विशेष बल दिया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देना तथा स्थानीय समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करना होता है। इको-टूरिज्म के अंतर्गत वन क्षेत्र, राष्ट्रीय उद्यान, अभयारण्य, पर्वतीय क्षेत्र, नदी घाटियाँ तथा जैव विविधता से समृद्ध क्षेत्र प्रमुख आकर्षण के केंद्र होते हैं।

इको-टूरिज्म की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि पर्यटन गतिविधियाँ केवल आर्थिक लाभ तक सीमित न रहकर पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय संस्कृति के संरक्षण तथा सामाजिक विकास को भी प्रोत्साहित करें। इसके अंतर्गत पर्यटकों को प्राकृतिक संसाधनों के महत्व के प्रति जागरूक बनाया जाता है तथा उन्हें पर्यावरण अनुकूल व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके अतिरिक्त स्थानीय समुदायों को पर्यटन गतिविधियों में सहभागी बनाकर उनके लिए रोजगार एवं आय के नए अवसर उत्पन्न किए जाते हैं, जिससे पर्यटन विकास अधिक स्थायी और संतुलित बनता है।

### 3.3 सतत पर्यटन विकास का सिद्धांत

सतत पर्यटन विकास वह प्रक्रिया है जिसमें पर्यटन गतिविधियों का विकास इस प्रकार किया जाता है कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके। इस सिद्धांत के अंतर्गत आर्थिक विकास, सामाजिक समानता तथा पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक माना जाता है। सतत पर्यटन विकास का उद्देश्य केवल पर्यटन गतिविधियों का विस्तार करना नहीं होता, बल्कि पर्यटन संसाधनों के दीर्घकालीन संरक्षण को सुनिश्चित करना भी होता है।

सतत पर्यटन विकास के अंतर्गत स्थानीय समुदाय की सहभागिता, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, पर्यावरणीय प्रभावों का नियंत्रण तथा सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण प्रमुख तत्व माने जाते हैं। इसके माध्यम से पर्यटन गतिविधियों के कारण उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है तथा

प्राकृतिक पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखा जा सकता है। इस प्रकार सतत पर्यटन विकास क्षेत्रीय विकास की एक दीर्घकालिक एवं संतुलित रणनीति के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

#### **4. सीधी जिले में पर्यटन संसाधनों की उपलब्धता एवं विकास की स्थिति**

सीधी जिला मध्यप्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ प्राकृतिक, वन्यजीव, धार्मिक तथा सांस्कृतिक पर्यटन की विविध संभावनाएँ उपलब्ध हैं, किंतु इन संसाधनों का योजनाबद्ध विकास अभी प्रारंभिक अवस्था में है। जिले की पर्यटन संरचना मुख्यतः वन क्षेत्र, नदी घाटियाँ, धार्मिक स्थल तथा प्राकृतिक परिदृश्यों पर आधारित है, जो इसे पारिस्थितिक पर्यटन के दृष्टिकोण से विशेष रूप से महत्वपूर्ण बनाते हैं।

सीधी जिले के प्राकृतिक पर्यटन संसाधनों में संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व, बघदरा अभयारण्य, सोन नदी घाटी क्षेत्र, बनास नदी तट, पारसिली घाटी तथा विभिन्न जलप्रपात प्रमुख आकर्षण के केंद्र हैं। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व लगभग 830 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है और मध्य भारत के महत्वपूर्ण संरक्षित वन क्षेत्रों में से एक है। यहाँ साल, सागौन, बाँस तथा मिश्रित उष्णकटिबंधीय वन पाए जाते हैं, जो वन्यजीवों के लिए उपयुक्त आवास प्रदान करते हैं। पारसिली क्षेत्र बनास नदी के किनारे स्थित होने के कारण प्राकृतिक दृश्यावली, नदी तटीय पर्यटन तथा पिकनिक पर्यटन के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसी प्रकार सोन नदी घाटी क्षेत्र में विकसित प्राकृतिक स्थल भू-आकृतिक दृष्टि से आकर्षक होने के साथ-साथ साहसिक पर्यटन के लिए भी संभावनाशील हैं।

जिले के सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्यटन संसाधनों में चंद्रेह का प्राचीन शिव मंदिर, सोन-बनास संगम क्षेत्र, स्थानीय देवी-देवताओं के प्राचीन मंदिर तथा पारंपरिक ग्रामीण सांस्कृतिक स्थल विशेष महत्व रखते हैं। चंद्रेह मंदिर परिसर ऐतिहासिक स्थापत्य शैली का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है तथा यह क्षेत्र धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। सोन-बनास संगम क्षेत्र धार्मिक आस्था का प्रमुख केंद्र होने के साथ-साथ क्षेत्रीय सांस्कृतिक गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण स्थल है। इसके अतिरिक्त स्थानीय मेलों, पारंपरिक उत्सवों तथा जनजातीय सांस्कृतिक परंपराओं में पर्यटन आकर्षण की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं।

सीधी जिले में वन्यजीव एवं पारिस्थितिक पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व तथा बघदरा अभयारण्य जैसे संरक्षित वन क्षेत्र बाघ, तेंदुआ, भालू, सांभर, चीतल तथा विभिन्न पक्षी प्रजातियों के प्राकृतिक आवास हैं, जो वन्यजीव पर्यटन के विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं। सोन घड़ियाल अभयारण्य नदी आधारित पारिस्थितिक पर्यटन की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है, जहाँ घड़ियाल संरक्षण के साथ-साथ नदी तटीय जैव विविधता का संरक्षण भी किया जा रहा है। जिले के विस्तृत वन क्षेत्र, नदी घाटियाँ तथा जैव विविधता से समृद्ध प्राकृतिक परिवेश इसे इको-टूरिज्म के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाते हैं।

पर्यटन अवसंरचना की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि जिले में सड़क संपर्क अपेक्षाकृत विकसित हो रहा है, परंतु कई प्रमुख पर्यटन स्थलों तक पहुँच मार्ग अभी भी पूर्णतः सुदृढ़ नहीं हैं। जिला मुख्यालय से संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व तथा पारसिली क्षेत्र तक सड़क संपर्क उपलब्ध है, किन्तु आंतरिक वन मार्गों का विकास सीमित है। आवासीय सुविधाओं की दृष्टि से वन विभाग के विश्राम गृह, सीमित निजी लॉज तथा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अतिथि गृह ही प्रमुख विकल्प हैं। परिवहन सुविधाओं में मुख्यतः सड़क परिवहन पर निर्भरता अधिक है, जबकि रेल एवं हवाई संपर्क की सीमित उपलब्धता पर्यटन विकास को प्रभावित करती है। पर्यटक सूचना केंद्र, मार्गदर्शक सेवाएँ तथा संगठित पर्यटन पैकेज जैसी सुविधाएँ अभी पर्याप्त रूप से विकसित नहीं हो सकी हैं।

सीधी जिले में पर्यटन विकास की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं, विशेषकर पारिस्थितिक पर्यटन, नदी तटीय पर्यटन, धार्मिक पर्यटन तथा ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व को राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है तथा पारसिली क्षेत्र को प्रकृति आधारित पर्यटन केंद्र के रूप में उन्नत किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त सोन नदी घाटी क्षेत्र में साहसिक पर्यटन गतिविधियों जैसे ट्रेकिंग, कैंपिंग तथा बर्ड-वॉचिंग की संभावनाएँ भी उपलब्ध हैं। धार्मिक पर्यटन के अंतर्गत चंद्रह मंदिर परिसर तथा संगम क्षेत्रों का योजनाबद्ध विकास स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा दे सकता है।

इसके साथ ही जिले में पर्यटन विकास से संबंधित कुछ प्रमुख चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं, जिनमें अपर्याप्त अवसंरचना, सीमित परिवहन सुविधाएँ, पर्यटक आवास की कमी, पर्यटन स्थलों के प्रचार-प्रसार का अभाव

तथा प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त वन क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियों के अनियोजित विस्तार से पर्यावरणीय संतुलन प्रभावित होने की संभावना भी बनी रहती है। अतः आवश्यक है कि पर्यटन विकास को वैज्ञानिक नियोजन, पर्यावरण संरक्षण तथा स्थानीय समुदाय की सहभागिता के आधार पर संचालित किया जाए, जिससे जिले में पर्यटन संसाधनों का संतुलित एवं सतत विकास सुनिश्चित किया जा सके।

### सीधी जिले के प्रमुख पर्यटन संसाधनों का सार (तालिका)

क्रमांक	पर्यटन स्थल	प्रकार	विशेषताएँ	विकास की वर्तमान स्थिति
1	संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व	वन्यजीव/इको-टूरिज्म	बाघ, तेंदुआ, साल वन, जैव विविधता	आंशिक विकसित
2	बघदरा अभयारण्य	वन्यजीव पर्यटन	हिरण, भालू, मिश्रित वन क्षेत्र	सीमित सुविधाएँ
3	सोन घड़ियाल अभयारण्य	नदी पारिस्थितिक पर्यटन	घड़ियाल संरक्षण क्षेत्र	प्रारंभिक विकास अवस्था
4	पारसिली घाटी	प्राकृतिक पर्यटन	नदी तटीय दृश्यावली, पिकनिक स्थल	स्थानीय स्तर पर विकसित
5	सोन नदी घाटी	प्राकृतिक/साहसिक पर्यटन	घाटियाँ, प्राकृतिक परिदृश्य	संभावनाशील
6	बनास नदी तट	प्रकृति पर्यटन	शांत वातावरण, जल संसाधन	सीमित विकास

7	चंद्रेह शिव मंदिर	धार्मिक पर्यटन	प्राचीन स्थापत्य एवं धार्मिक महत्व	क्षेत्रीय स्तर पर प्रसिद्ध
8	सोन-बनास संगम	धार्मिक पर्यटन	संगम स्थल, धार्मिक आस्था	स्थानीय आकर्षण
9	स्थानीय जनजातीय सांस्कृतिक क्षेत्र	सांस्कृतिक पर्यटन	लोक परंपराएँ, उत्सव	अविकसित
10	वन क्षेत्रीय ट्रेकिंग मार्ग	साहसिक पर्यटन	प्राकृतिक ट्रेल्स, जैव विविधता	संभावनाशील

### 5. पर्यटन विकास का भूमि उपयोग परिवर्तन पर प्रभाव

सीधी जिले में पर्यटन विकास की प्रक्रिया ने भूमि उपयोग के स्वरूप में धीरे-धीरे परिवर्तन उत्पन्न किया है। विशेष रूप से पारिस्थितिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन तथा प्राकृतिक पर्यटन स्थलों के आसपास अवसंरचना विस्तार के कारण कृषि भूमि, वन क्षेत्र तथा नदी तटीय क्षेत्रों के उपयोग में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व, पारसिली क्षेत्र, सोन घाटी तथा चंद्रेह मंदिर जैसे पर्यटन स्थलों के आसपास परिवहन सुविधाओं, आवासीय संरचनाओं तथा स्थानीय व्यावसायिक गतिविधियों के विस्तार ने भूमि उपयोग की पारंपरिक संरचना को प्रभावित किया है। इस परिवर्तन का प्रभाव क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन पर भी पड़ता है।

पर्यटन गतिविधियों के विस्तार के कारण कृषि भूमि का उपयोग आंशिक रूप से पर्यटन संबंधी गतिविधियों की ओर परिवर्तित होने लगा है। पर्यटन स्थलों के समीप स्थित कृषि भूमि का उपयोग पार्किंग स्थल, अस्थायी दुकानों, भोजनालयों, पर्यटक विश्राम स्थलों तथा स्थानीय बाजारों के रूप में किया जाने लगा है। पारसिली क्षेत्र तथा नदी तटीय क्षेत्रों के आसपास पिकनिक पर्यटन के विकास के कारण कृषि भूमि के पारंपरिक उपयोग में परिवर्तन देखा गया है। इसके अतिरिक्त धार्मिक पर्यटन स्थलों के आसपास मेले एवं उत्सवों के आयोजन से

कृषि भूमि का अस्थायी व्यावसायिक उपयोग बढ़ा है, जिससे भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

वन क्षेत्र पर पर्यटन गतिविधियों का प्रभाव विशेष रूप से संरक्षित क्षेत्रों के आसपास अधिक दिखाई देता है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व तथा बघदरा अभयारण्य जैसे क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियों के विस्तार के कारण वन मार्गों का विकास, पर्यटक भ्रमण मार्गों का निर्माण तथा वन विश्राम गृहों की स्थापना की गई है। इन गतिविधियों से वन क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष परिवर्तन होते हैं, जिनमें वनस्पति संरचना पर दबाव, वन्यजीव आवास में हस्तक्षेप तथा संसाधनों के उपयोग में वृद्धि शामिल है। हालांकि नियंत्रित पर्यटन गतिविधियाँ जैव विविधता संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक होती हैं, किन्तु अनियोजित पर्यटन विस्तार वन क्षेत्र के दीर्घकालीन संतुलन को प्रभावित कर सकता है।

शहरीकरण एवं अवसंरचना विस्तार पर्यटन विकास की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो भूमि उपयोग परिवर्तन को तीव्र गति प्रदान करता है। सीधी नगर तथा प्रमुख पर्यटन स्थलों के आसपास आवासीय क्षेत्रों, बाजारों, परिवहन सुविधाओं तथा सार्वजनिक सेवाओं का विस्तार हुआ है। पर्यटन गतिविधियों के कारण स्थानीय स्तर पर व्यापारिक प्रतिष्ठानों, भोजनालयों तथा सेवा क्षेत्र से संबंधित संरचनाओं में वृद्धि हुई है, जिससे भूमि उपयोग का स्वरूप कृषि आधारित गतिविधियों से सेवा आधारित गतिविधियों की ओर परिवर्तित होने लगा है। यह परिवर्तन क्षेत्रीय आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है, किन्तु इसके साथ ही प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी उत्पन्न करता है।

सड़क निर्माण एवं परिवहन सुविधाओं के विस्तार ने भी भूमि संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। पर्यटन स्थलों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए आंतरिक सड़कों, संपर्क मार्गों तथा वन मार्गों का विकास किया गया है, जिससे पहले से दुर्गम क्षेत्रों तक पहुँच आसान हुई है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व, पारसिली घाटी तथा सोन नदी घाटी क्षेत्र तक सड़क संपर्क के विकास से पर्यटन गतिविधियों में वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप आसपास के क्षेत्रों में भूमि उपयोग का स्वरूप परिवर्तित हुआ है। सड़क निर्माण के कारण प्राकृतिक ढाल, मिट्टी संरचना तथा जल निकास प्रणाली पर भी प्रभाव पड़ता है, जिससे भू-आकृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया तेज होती है।

होटल, रिसॉर्ट एवं अन्य पर्यटन सुविधाओं का विस्तार भी भूमि उपयोग परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक है। यद्यपि सीधी जिले में बड़े स्तर पर पर्यटन अवसंरचना अभी विकसित नहीं हुई है, फिर भी पर्यटन स्थलों के आसपास छोटे स्तर के विश्राम गृह, निजी लॉज, भोजनालय तथा पर्यटक सेवाओं से संबंधित संरचनाओं का विकास हुआ है। इन सुविधाओं के विकास से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर उत्पन्न हुए हैं तथा सेवा क्षेत्र की गतिविधियों में वृद्धि हुई है। भविष्य में यदि पर्यटन गतिविधियों का विस्तार योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है, तो होटल, रिसॉर्ट, पर्यटक सूचना केंद्र तथा मनोरंजन सुविधाओं के विकास के साथ भूमि उपयोग परिवर्तन की प्रक्रिया और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकती है।

इस प्रकार सीधी जिले में पर्यटन विकास के कारण भूमि उपयोग परिवर्तन की प्रक्रिया धीरे-धीरे विकसित हो रही है, जिसमें कृषि भूमि के उपयोग में परिवर्तन, वन क्षेत्रों पर प्रभाव, शहरीकरण का विस्तार, सड़क निर्माण तथा पर्यटन अवसंरचना का विकास प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं। यदि इन परिवर्तनों का समुचित नियोजन एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से प्रबंधन किया जाए, तो पर्यटन विकास क्षेत्रीय आर्थिक उन्नति के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

## **6. पर्यटन विकास का पर्यावरणीय परिवर्तन पर प्रभाव**

### **6.1 प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव (जल, वन, भूमि)**

सीधी जिले में पर्यटन गतिविधियों के विस्तार के साथ प्राकृतिक संसाधनों—विशेषकर जल, वन एवं भूमि—पर दबाव बढ़ता हुआ दिखाई देता है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व, पारसिली क्षेत्र तथा सोन नदी तटीय क्षेत्रों में पर्यटकों की बढ़ती आवाजाही के कारण पेयजल उपयोग, अस्थायी निर्माण गतिविधियों तथा परिवहन सुविधाओं का विस्तार हुआ है, जिससे स्थानीय संसाधनों पर अतिरिक्त भार पड़ने लगा है। पिकनिक पर्यटन स्थलों के आसपास जल स्रोतों का अनियंत्रित उपयोग तथा नदी तटों पर मानवीय गतिविधियों की वृद्धि जल संसाधनों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसी प्रकार वन क्षेत्रों में भ्रमण मार्गों, विश्राम स्थलों एवं पर्यटन सुविधाओं के विकास से वन क्षेत्र पर दबाव बढ़ता है तथा प्राकृतिक वनस्पति संरचना में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है। भूमि उपयोग के स्वरूप में भी परिवर्तन होने लगता है, जिससे प्राकृतिक भू-आकृतिक संरचना प्रभावित होती है।

## 6.2 जैव विविधता में परिवर्तन

पर्यटन गतिविधियों के बढ़ते प्रभाव से सीधी जिले की जैव विविधता पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व तथा बघदरा अभयारण्य जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में पर्यटकों की बढ़ती आवाजाही से वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास में व्यवधान उत्पन्न होता है। मानव गतिविधियों की वृद्धि के कारण वन्यजीवों के प्रवास मार्ग प्रभावित होते हैं तथा उनके व्यवहार में परिवर्तन देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त पर्यटन स्थलों के आसपास अवैज्ञानिक निर्माण कार्यों से वनस्पति संरचना में परिवर्तन तथा स्थानीय प्रजातियों की संख्या में कमी की संभावना रहती है। यद्यपि नियंत्रित पर्यटन गतिविधियाँ संरक्षण जागरूकता बढ़ाने में सहायक होती हैं, किन्तु अनियोजित पर्यटन विस्तार जैव विविधता के दीर्घकालीन संतुलन को प्रभावित कर सकता है।

## 6.3 प्रदूषण (वायु, जल, ध्वनि)

पर्यटन विकास के साथ विभिन्न प्रकार के प्रदूषण की समस्याएँ भी उत्पन्न होने लगती हैं। सीधी जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर वाहनों की संख्या में वृद्धि से वायु प्रदूषण की स्थिति प्रभावित होती है। विशेष रूप से पिकनिक स्थलों तथा धार्मिक पर्यटन स्थलों के आसपास ध्वनि प्रदूषण की समस्या देखी जाती है, जो वन्यजीवों तथा स्थानीय पर्यावरण दोनों पर प्रभाव डालती है। नदी तटीय क्षेत्रों में प्लास्टिक कचरे, भोजन अवशेषों तथा अन्य अपशिष्ट पदार्थों के कारण जल प्रदूषण की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इन प्रदूषणों का प्रभाव न केवल पर्यावरणीय गुणवत्ता पर पड़ता है, बल्कि पर्यटन स्थलों की प्राकृतिक आकर्षण क्षमता भी प्रभावित होती है।

## 6.4 पारिस्थितिक संतुलन में परिवर्तन

पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से पारिस्थितिक संतुलन में परिवर्तन की प्रक्रिया भी देखी जाती है। प्राकृतिक क्षेत्रों में मानव हस्तक्षेप बढ़ने से वनस्पति आवरण में कमी, मिट्टी अपरदन तथा जल निकास प्रणाली में परिवर्तन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। विशेष रूप से वन क्षेत्रों में अनियंत्रित पर्यटन गतिविधियों से वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास प्रभावित होते हैं तथा पारिस्थितिक तंत्र की संरचना में असंतुलन उत्पन्न हो सकता है। इसके

अतिरिक्त नदी घाटियों तथा पहाड़ी ढालों पर बढ़ती पर्यटन गतिविधियाँ स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता को प्रभावित करती हैं, जिससे दीर्घकालीन पर्यावरणीय परिवर्तन की संभावना बढ़ जाती है।

### 6.5 अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या

पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या भी उत्पन्न होती है। सीधी जिले के पारसिली क्षेत्र, नदी तटीय पर्यटन स्थलों तथा धार्मिक स्थलों के आसपास प्लास्टिक, खाद्य अपशिष्ट एवं अन्य अवशेषों का संचय पर्यावरणीय गुणवत्ता को प्रभावित करता है। संगठित अपशिष्ट प्रबंधन व्यवस्था के अभाव में यह कचरा प्राकृतिक संसाधनों को प्रदूषित करता है तथा स्थानीय जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। इसके अतिरिक्त वन क्षेत्रों में पर्यटकों द्वारा छोड़े गए अपशिष्ट पदार्थ वन्यजीवों के लिए भी हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। अतः आवश्यक है कि पर्यटन स्थलों पर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जनजागरूकता कार्यक्रमों तथा पर्यावरण अनुकूल पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जाए, जिससे पर्यावरणीय प्रभावों को नियंत्रित किया जा सके।

### निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सीधी जिला प्राकृतिक संसाधनों, जैव विविधता, वन क्षेत्र, नदी घाटियों तथा धार्मिक स्थलों की दृष्टि से पर्यटन विकास के लिए अत्यंत संभावनाशील क्षेत्र है। संजय-दुबरी टाइगर रिजर्व, बघदरा अभयारण्य, सोन नदी घाटी, पारसिली क्षेत्र तथा चंद्रेह मंदिर जैसे स्थल जिले में प्राकृतिक, पारिस्थितिक तथा धार्मिक पर्यटन के प्रमुख आधार प्रदान करते हैं। इन संसाधनों का योजनाबद्ध उपयोग क्षेत्रीय आर्थिक विकास, रोजगार सृजन तथा स्थानीय समुदाय के जीवन स्तर में सुधार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि पर्यटन विकास के साथ भूमि उपयोग के स्वरूप में परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। पर्यटन स्थलों के आसपास सड़क निर्माण, परिवहन सुविधाओं का विस्तार, आवासीय संरचनाओं की वृद्धि तथा स्थानीय व्यावसायिक गतिविधियों के विकास के कारण कृषि भूमि एवं वन क्षेत्रों के

उपयोग में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। यह परिवर्तन एक ओर क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है, वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव भी उत्पन्न करता है।

पर्यटन गतिविधियों के विस्तार का पर्यावरणीय प्रभाव भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। जल संसाधनों के उपयोग में वृद्धि, वन क्षेत्रों पर मानवीय हस्तक्षेप, जैव विविधता पर दबाव, वायु एवं ध्वनि प्रदूषण तथा अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याएँ पर्यटन विकास के प्रमुख पर्यावरणीय प्रभावों के रूप में सामने आती हैं। विशेष रूप से संवेदनशील वन क्षेत्रों में अनियोजित पर्यटन गतिविधियाँ पारिस्थितिक संतुलन को प्रभावित कर सकती हैं। अतः पर्यटन विकास की प्रक्रिया को वैज्ञानिक नियोजन एवं पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों के अनुरूप संचालित करना आवश्यक है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष भी प्राप्त होता है कि सीधी जिले में पर्यटन अवसंरचना अभी प्रारंभिक अवस्था में है। सड़क संपर्क, आवासीय सुविधाएँ, परिवहन व्यवस्था, पर्यटक सूचना केंद्र तथा प्रशिक्षित मानव संसाधनों की उपलब्धता में सुधार की आवश्यकता है। यदि इन आधारभूत सुविधाओं का योजनाबद्ध विकास किया जाए, तो जिले में पर्यटन गतिविधियों को अधिक प्रभावी रूप से विकसित किया जा सकता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सीधी जिले में पर्यटन विकास क्षेत्रीय आर्थिक उन्नति का एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हो सकता है, बशर्ते इसे सतत विकास की अवधारणा के अनुरूप नियोजित किया जाए। स्थानीय समुदाय की सहभागिता, पर्यावरणीय संतुलन का संरक्षण, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग तथा पर्यटन वहन क्षमता के आधार पर नियोजन अपनाकर जिले में पर्यटन विकास को दीर्घकालीन एवं संतुलित बनाया जा सकता है। इससे न केवल क्षेत्रीय विकास को गति मिलेगी, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण भी सुनिश्चित किया जा सकेगा।

## संदर्भ सूची

ब्रायसोलिस, एच. (2002). Sustainable tourism and the question of the commons. *Annals of Tourism Research*, 29(4), 1065–1085.

[https://doi.org/10.1016/S0160-7383\(02\)00021-X](https://doi.org/10.1016/S0160-7383(02)00021-X)

कपूर, आर. (2018). Environmental impacts of tourism. <https://www.researchgate.net/publication/323733792>

मध्यप्रदेश शासन. (2003). *Twenty year perspective plan for tourism development in Madhya Pradesh*.

<https://tourism.gov.in/sites/default/files/2020-04/MP.pdf>

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). *India tourism statistics 2022*. <https://tourism.gov.in/publications/india-tourism-statistics-2022>

शार्पले, आर., एवं टेल्फर, डी. जे. (2015). *Tourism and development: Concepts and issues*. Channel View Publications.

<https://www.channelviewpublications.com>

सिंह, एस. (2014). *Tourism geography*. Prayag Pustak Bhawan.

सुनलु, यू. (2003). Environmental impacts of tourism. <https://www.researchgate.net/publication/40137218>

यूएनडब्ल्यूटीओ. (2018). Tourism for sustainable development goals. <https://www.unwto.org/tourism4sdgs>

डब्ल्यूटीटीसी. (2021). Travel & tourism economic impact report. <https://wtcc.org/research/economic-impact>

बाल्यानी, आर., एवं चौबे, एस. के. (2022). Development of ecotourism destinations in Madhya Pradesh.

<https://www.questjournals.org/jrhss/papers/vol10-issue5/Ser-2/L10055356.pdf>

जिला प्रशासन, सीधी. (2023). *सीधी जिले के पर्यटन स्थल.*

<https://sidhi.nic.in/en/tourist-place/>

मध्यप्रदेश वन विभाग. (2022). *संजय दुबरी टाइगर रिजर्व विवरणिका.*

<https://sidhi.nic.in/en/tourist-place/sanjay-dubri-national-park-and-tiger-reserve/>

भारत सरकार. (2024). *जिला जनगणना पुस्तिका: सीधी जिला.*

<https://censusindia.gov.in>

भारतीय मौसम विभाग. (2022). *मध्यप्रदेश की जलवायु प्रोफ़ाइल.*

<https://mausam.imd.gov.in>

केंद्रीय जल आयोग. (2021). *सोन नदी बेसिन रिपोर्ट.*

<https://cwc.gov.in>

मध्यप्रदेश शासन. (2023). *मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण: वन एवं प्राकृतिक संसाधन.*

<https://mp.gov.in>

मध्यप्रदेश पर्यटन विकास बोर्ड. (2022). *संजय दुबरी राष्ट्रीय उद्यान पर्यटन मार्गदर्शिका.*

<https://www.mptourism.com/sanjay-dubri-national-park.html>

रीवा संभाग प्रशासन. (2023). *संजय दुबरी टाइगर रिजर्व विवरण.*

<https://rewadivisionmp.nic.in/en/tourist-place/sanjay-dubri-tiger-reserve/>

भारतीय वन्यजीव संस्थान. (2021). *मध्य भारतीय परिदृश्य की जैव विविधता की स्थिति.*

<https://wii.gov.in>



बघदरा वन्यजीव अभयारण्य रिपोर्ट. (2018). *सीधी जिले के बघदरा अभयारण्य की जीव विविधता*.  
[https://en.wikipedia.org/wiki/Bagdara\\_Wildlife\\_Sanctuary](https://en.wikipedia.org/wiki/Bagdara_Wildlife_Sanctuary)

